अध्ययन सामग्री
बी. ए. पार्ट 3
प्रश्नपत्र - सप्तम
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्राचार्य
संस्कृत विभाग
एच. डी. जैन कॉलेज, आरा
वी. कुं. सिं. वि०

छन्द — छन्दःशास्त्र को वेदों के छह अंगों में से एक कहा गया है। वेद के छह अंग निम्नलिखित हैं —

शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चयः।
ज्योतिषामयनं चैव वेदाङ्गानि षडेव तु ॥

छन्द को वेद का पाद कहा गया है —

छन्दः पादौ तु वेदस्य

पादस्थानीय होने के कारण छन्द परम पूजनीय है, जिस प्रकार लोक में बिना पैर के मनुष्य पंगु है, उसी प्रकार काव्यलोक में बिना छन्दःशास्त्र के ज्ञान के मनुष्य पंगु के समान है। अतः छन्दःशास्त्र का ज्ञान मनुष्य के लिए परमावश्यक है।

'छन्दस्' (छद् धातु + असुन् प्रत्यय) शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है - आच्छादित करनेवाला या स्तुति का साधन।

कात्यायन की सर्वानुक्रमणी में छन्द का लक्षण दिया गया है — यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः। अर्थात् अक्षर परिमाण को छन्द कहा जाता है।

संस्कृत वाङ्मय में सामान्यतः लय को बताने के लिए छन्द शब्द का प्रयोग किया गया है। लय और ताल से युक्त ध्वनि मनुष्य के हृदय पर प्रभाव डाल कर उसे एक विषय में स्थिर कर देती है और मनुष्य उससे प्राप्त आनन्द में डूब जाता है। यही कारण है कि लय और ताल वाली रचना छन्द कहलाती है, इसका दूसरा नाम वृत्त है। वृत्त का अर्थ है

Scanned by CamScanner

प्रभावशाली रचना। वृत्त भी छन्द को इसलिए कहते हैं, क्योंकि अर्थ जाने बिना भी सुनने वाला इसकी स्वर-लहरी से प्रभावित हो जाता है।

छन्दों का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में प्राप्त होता है। छन्दों में प्रायः चार चरण होते हैं किन्तु कुछ छन्द छह चरणों के भी होते हैं।

छन्द के दो प्रकार होते हैं —

1) वैदिक छन्द 2) लौकिक छन्द

लौकिक छन्द के दो भेद किए गए हैं — 1) मात्रिक छन्द 2) वर्णिक छन्द

इनमें वर्णिक को वृत्त और मात्रिक छन्द को जाति कहा जाता है।

पिङ्गलादिभिराचार्यैः यदुक्तं लौकिकं द्विधा।
मात्रावर्णविभेदेन छन्दस्तदिह कथ्यते॥

छन्दः शास्त्र में वृत्त के तीन भेद माने गये हैं —
सम, अर्धसम और विषम

जिसके चारों चरणों में समान अक्षर होते हैं उसे <u>समवृत्त</u> कहते हैं।

जिसके प्रथम और तृतीय में समान तथा द्वितीय और चतुर्थ में समान अक्षर हों, वह <u>अर्धसम</u> होता है।

जिसके चारों चरणों में एक-दूसरे से भिन्न अक्षर हों, उसे विषम वृत्त कहते हैं।

वृत्तों की यह अक्षर गणना गुरु-लघु वर्णों के आधार पर होती है।

अक्षर दो प्रकार के होते हैं 1) लघु और 2) गुरु।

<u>लघु अक्षर</u> उसे कहते हैं, जिसमें ह्रस्व स्वर हो।

<u>गुरु अक्षर</u> उसे कहते हैं, जिसमें स्वर दीर्घ हो।

Scanned by CamScanner

ह्रस्व स्वर – अ, इ, उ, ऋ तथा ऌ
दीर्घ स्वर – आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ, ऐ, औ तथा औं

संयुक्तात्यं दीर्घं सानुस्वारं विसर्गसन्मिश्रम् ।
विज्ञेयमक्षरं गुरु पादान्तस्थं विकल्पेन ॥

संयुक्त वर्ण के पूर्व का अक्षर, दीर्घ, अनुस्वार सहित, विसर्गयुक्त अक्षर गुरु माना जाता है और पाद के अन्त का लघु वर्ण भी विकल्प से गुरु हो जाता है, जिनका उदाहरण क्रमशः निम्न प्रकार है –

1) संयुक्तात्यं – सत्य, विप्र, धर्म में स, वि, र्म गुरु है
2) दीर्घम् – राम में रा गुरु है
3) सानुस्वारम् – सततं, गृहं में तं, हं गुरु है
4) विसर्गसन्मिश्रम् – कः, सः, रामः में कः, सः, मः गुरु है
5) पादान्तस्थं विकल्पेन – त्वमेव माता च पिता त्वमेव में अन्त का 'व' गुरु है ।

वृत्तशास्त्र की ऐसी परिपाटी है कि यदि पद्य में पाद के अन्त वाला अक्षर गुरु अपेक्षित है, किन्तु वह लघु है तो उसे उस स्थान पर गुरु ही मान लेते हैं । इसी प्रकार यदि किसी पद्य में पाद के अन्त वाला अक्षर ह्रस्व अपेक्षित है किन्तु वह गुरु है, तो वह भी आवश्यकतानुसार लघु मान लिया जाता है ।

लघु स्वर की एक मात्रा, दीर्घ एवं संयुक्त स्वरों की दो मात्राएँ होती हैं ।

मात्रिक छन्द में मात्राओं की गिनती की जाती है ।

वर्णिक छन्दों में वर्णों की संख्या निश्चित होती है और इनमें लघु और दीर्घ का क्रम भी निश्चित होता है । जबकि मात्रिक छन्दों में इस क्रम का होना अनिवार्य नहीं है ।

Scanned by CamScanner

त्रिक – तीन वर्णों (अक्षरों) के संयोग को त्रिक (गण) कहते हैं। प्रस्तार भेद से इनके आठ रूप होते हैं। इन आठ त्रिकों (गणों) को एक-एक नाम दिया गया है। इन आठों त्रिकों के ज्ञान के लिए एक सूत्र है, जिसके आधार पर आठों गणों के स्वरूप का परिचय मिलता है –

यमाताराजभानसलगा:

इस सूत्र के आधार पर ही आठों त्रिकों का ज्ञान होता है। इस सूत्र में कुल दस अक्षर हैं। इन्हीं दसों अक्षरों से काव्य जगत् भरा हुआ है। जिस प्रकार विष्णु से समस्त जगत् व्याप्त है उसी प्रकार उक्त दस अक्षरों से समस्त काव्य-जगत् व्याप्त है। इन्हीं दस अक्षरों से आठ गण और लघु-गुरु बनते हैं; जैसे –

यगण
मगण
तगण
रगण
जगण
भगण
नगण
सगण
लघु
गुरु

इनमें से गुरु का चिह्न वक्र रेखा (ऽ) और लघु का चिह्न खड़ी रेखा (।) है।

गणों का स्वरूप →

क्रम संख्या	नाम	स्वरूपरेखा	वर्णरूप	उदाहरण
1	यगण	।ऽऽ	यमाता	पताका
2	मगण	ऽऽऽ	मातारा	मायावी
3	तगण	ऽऽ।	ताराज	पाताल
4	रगण	ऽ।ऽ	राजभा	राधिका
5	जगण	।ऽ।	जभान	जलेश
6	भगण	ऽ।।	भानस	भूषण
7	नगण	।।।	नसल	नवम
8	सगण	।।ऽ	सलगा:	सरिता
9	लघु	।	ल	ल
10	गुरु	ऽ	गा:	गा

Scanned by CamScanner